क्या मसीही होना ही पर्याप्त है?

...शायद मुझे अपने कार्यों पर ध्यान देना चाहिए।

टॉम वाटसन का व्यापार सफल था और बढ़ भी रहा था। वह स्वयं कठोर परिश्रम करने से हिचकिचाता नहीं था और अपने कर्मचारियों से भी ऐसी ही अपेक्षा करता था। वह आलस देख नहीं सकता था और जो कर्मचारी अच्छा काम नहीं करता उसे वह डाँटने से हिचकता नहीं था। टॉम एक मसीही था।

वह अपनी कलीसिया (चर्च) का एक सक्रिय सदस्य था, और यहाँ भी वह अपने उत्तरदायित्वों को पूरे उत्साह से पूरा किया करता जैसा वह अपने व्यवसाय में करता था। परन्तु कई बार उसे महसूस हुआ कि उसके कार्य करने के ढंग से अन्य मसीहियों को बुरा लगता है। अक्सर, ऐसा प्रतीत होता कि जो सन्देश (उपदेश) दिए जाते उनमें टॉम के कार्यों के प्रति विरोध होता, जबकि ये ऐसे दिखाई देते कि उसके कार्यों से प्रस्तुत परिणामों की प्रशंसा की गई हो। टॉम को यह बात मानने के लिए दबाया गया कि चाहे वह अपने कार्यों या अपने परिश्रम का पक्ष ही क्यों न ले और उन्हें ठीक ठहराए परन्तु उसने महसूस किया कि अन्दर से वह उनको प्रसन्न नहीं कर पाया है। एक बात का उसे निश्चय था: उसके मन में एक अर्न्तद्वन्द्व चल रहा था जो स्पष्ट अनुमोदित नहीं हुआ था।

हो सकता है कि आपने अपने आप से प्रश्न किया हो कि मेरा सही व्यक्तित्व क्या है? क्या जैसा बाइबल कहती है मैं वैसा ही हूँ

अथवा जैसा मैं सोचता हूँ वैसा हूँ? जब हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं तब भी हमारे लिए यह समझ पाना कठिन हो सकता है कि हम क्या हैं। क्या हम सैनिक अथवा मेल कराने वाले हैं? क्या साहसी अथवा दीन हैं? धीरज वाले अथवा आक्रामक हैं? इस पाठ में हम तुलनात्मक अध्ययन करेंगे—बाइबल क्या कहती है कि हम कैसे हैं और हमारे अपने अनुभव एवं कार्यों में हम क्या हैं। हम यह खोज करेंगे कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या महत्त्वपूर्ण हैं। तब हम सीखेंगे कि परमेश्वर की अपेक्षा के अनुरूप हम कैसे बन सकते हैं। यही हमारा सही लक्ष्य है।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परमेश्वर हमें कैसे देखता है अर्थात् हमारे प्रति परमेश्वर का देखना कैसा है।
- परमेश्वर की दृष्टि में क्या महत्त्वपूर्ण है।
- परमेश्वर की अपेक्षाओं (माँगों) को पूरा करना।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है उसका विवरण।
- मसीह के कार्य के महत्त्व और उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया को समझाना।
- परमेश्वर जो हमसे अपेक्षाएँ करता है उन्हें हम क्यों पूरा कर सकते हैं—इसके कारणों को बताना।

परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है

विषयवस्तु 1. परमेश्वर हमें किस रूप में देखता है इसके लिए एक वर्णन को चुनना।

जब हम इस बात की खोज करते हैं कि परमेश्वर हमें किस रूप में या किस दृष्टि से देखता है, तो आइए हम देखें कि बाइबल हमारे विषय में क्या कहती है।

बाइबल क्या कहती है

हम कुछ मसीहियों को इस विषय पर बात करते हुए सुन सकते हैं कि वे "मसीह में" क्या हैं। यह प्रायः कथा या स्वप्न-चित्र की भाषा प्रतीत होती है। परन्तु सच्चाई तो यह है कि बाइबल हमारी सही दशा का वर्णन करती है।

इफिसियों की पत्री के पहले अध्याय में कहा गया है कि स्वर्गिक संसार में हमारे लिए आशीष ही आशीष हैं। (पद 3)। हम पवित्र और निर्दोष हों (पद 4)। हम परमेश्वर के लोग (प्रजा) होने के लिए चुने गए हैं, क्योंकि यह उसका अभिप्राय और निर्णय है (पद 11)। 2 अध्याय हमें बताता है कि हम मसीह के साथ जिलाए गए तथा मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया (पद 5, 6)। हम जैसे भी हैं परमेश्वर के बनाए हुए हैं (पद 10), और हम पवित्र लोगों के साथ स्वदेशी (नागरिक) तथा परमेश्वर के घराने के हो गए हैं (पद 19)

ये ही विचार हम 1 पतरस 2:9 में पाते हैं। वहाँ हम पढ़ते हैं कि हम चुना हुआ वंश, राजपदधारी, याजकों का समाज और पवित्र लोग और परमेश्वर की निज प्रजा हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ और भी बातों का वर्णन किया गया है। क्या ही श्रेष्ठ नाम और पद देने के सुझाव दिए गए हैं?

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिए गए सन्दर्भों (पदों) को पढ़िए। ऐसे सन्दर्भ वाले अक्षर पर गोला बनाएँ जिनमें यह विवरण दिया गया है कि हम "मसीह में" हैं।

(अ) इफिसियों 2:22
(ब) इफिसियों 4:1
(स) इफिसियों 4:17

हम क्या अनुभव करते हैं

फिर भी, हमारे वास्तविक अनुभव में हम संघर्ष करते हुए पाए जाते हैं। हम थकते हैं, भूखे होते हैं और हमें प्यास लगती है। हम महत्वाकांक्षी हैं, हमारे स्वप्न हैं। हम अपने अन्दर द्वन्द्व या प्रेरणा महसूस करते हैं और बाहर हमारे लिए आकर्षण हैं। पाप करने की

परीक्षा में गिरना हम से दूर नहीं किया गया है। जब हम सोचते हैं कि हम एक क्षेत्र में विजयी हुए तभी हम पाते हैं दूसरी ओर हमारे लिए युद्ध (संघर्ष) तैयार है।

हम में से कुछ परमेश्वर के सन्तान होने के नाते यह पाते हैं कि दूसरे विश्वासियों के साथ हमारा सम्बन्ध व व्यवहार सही नहीं है। हम भय, शत्रुता, निराशा का सामना करते हैं। परमेश्वर हमें ऐसे नाम देता है जिनके अर्थों से ऐसा लगता है कि हम आकाश पर ऊँचे पहुँच रहे हैं। हम सब अपनी सीमित सीमाओं से भलीभाँति परिचित हैं और ये सीमित दायरे आकाश से नहीं पर पृथ्वी से ही जोड़े जाते या एकात्मकता रखते हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे कार्य करने के ढंग अधिकतर हमारे पृथ्वी (सांसारिक) स्वभाव को ही प्रकट करते हैं—स्वर्गिक गुणों (स्वभाव) को नहीं। हमारे लिए यह सरल होता कि हम उसी तरह प्रार्थना करते रहते जैसे पहले अपनी समस्याओं के निदान के लिए किया करते थे। परन्तु इसके विपरीत, अक्सर हमारा अनुभव यह रहा है कि हमारी प्रार्थनाओं ने समस्याओं का निदान नहीं किया। हम अभी भी परीक्षाओं और निराशाओं का सामना किया करते हैं।

इन सब कठिनाइयों को हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा (योजना) जानने हेतु कैसे जोड़ सकते हैं? क्या यह अपेक्षाकृत सरल है कि हम "जीवन" के निर्णय ले सकते हैं जैसे—शिक्षक, पास्टर या डाक्टर बनने इत्यादि के निर्णय। परन्तु परमेश्वर की इच्छा हमारे लिए मात्र जीवन के निर्णय लेने से कहीं अधिक और कुछ सम्मिलित करती है। इसमें हमारे समस्त कार्य भी सम्मिलित हैं। वास्तविक कठिनाई यह है कि हम जो जानते हैं कि हमें करना चाहिए वह हमें किस प्रकार करना चाहिए।

हम उन बातों पर अधिक महत्त्व देते हैं जो वास्तव में महत्त्वपूर्ण नहीं हैं और जो बातें महत्त्वपूर्ण हैं उन्हें हम

अमहत्त्वपूर्ण मान बैठते हैं। हमारे सम्बन्ध जटिल बन जाते हैं। हमारे उद्देश्य (लक्ष्य) स्पष्ट दर्शाते हैं कि हम दो विचारों में उलझे हुए हैं। जब हम जीवन को कष्टदायक बनाने वाले निर्णय ले लेते हैं तो इसका कारण यह है कि हमारे प्रतिदिन के निर्णय सही नहीं है।

तब, यह इस बात का प्रमाण है कि मसीह में अपनी दशा को जानते हुए भी यदि हम अपने आचार-व्यवहार, कार्यों के ढंग, लक्ष्यों अथवा इच्छाओं के प्रति सजग नहीं रहते तो हमारी दशा दयनीय है।

आपके लिए कार्य

2 शायद आपने यह महसूस किया है कि आपके जीवन के कुछ क्षेत्रों में आपने मसीह की इच्छानुसार अथवा जिस प्रकार मसीह में चलना चाहिए, उस प्रकार चलने हेतु वास्तविक कठिनाई का सामना किया है। नीचे दिए खाके में ऐसी कुछ कठिनाइयों का विवरण है। आप इन कठिनाइयों को तीन श्रेणी में रखना चाहेंगे। दाएँ हाथ पर दिए गए खानों में × का चिन्ह लगाकर आप अपने हिसाब से कठिनाई का वर्गीकरण कर सकते हैं। जब आप अध्ययनरत रहते हैं तो परमेश्वर से अपेक्षा करें कि जो समस्यायें आपने दर्शाई हैं उनको हल करने में आपकी सहायता करे।

	नहीं के बराबर	कुछ	बहुत अधिक
सार्थक लक्ष्यों की ओर बढ़ना			
स्वार्थपूर्ण प्रयोजनों (कारणों) पर जीत पाना			
सही निर्णय लेना			
परीक्षा से जूझना			
दूसरों से नाता जोड़ना			
महत्त्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करना			

परमेश्वर क्या देखता है

जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो अक्सर यह देखा गया है कि माता-पिता बच्चों के बचपन के अच्छे समयों को ही स्मरण रखते हैं। उनको बड़ा करने में जिन कठिनाइयों का सामना किया गया—रात-रात भर जागना, बच्चों की बीमारियाँ, उनका उलटी करना, प्रसाधनों-कपड़ों के प्रति सिखाना—ये सब "अरुचिकर" समयों के वे भूल जाते हैं। केवल स्नेह और निकटता के क्षण ही याद के हैं। जिस बच्चे को सिखाना अत्याधिक कठिन होता है उसे अक्सर एक दूत के समान स्मरण किया जाता है। क्या ऐसे ही परमेश्वर हमें देखता है—पक्षपातपूर्ण आँखों से? बिल्कुल भी नहीं!

परमेश्वर की धार्मिकता का अटल, निरपेक्ष (परम) स्तर है। वह हमें "सन्त", "अपने सन्तान", "याजक" कहकर पुकारता है। जब वह हम पर दृष्टि करता है तो वह क्या देखता है?

जब परमेश्वर हम पर दृष्टि करता है तो वह हमें ठीक वैसा ही देखता है जैसे कि हम वास्तव में हैं। वह हमारी स्वाभाविक अभिलाषा (प्रवृत्ति) को देखता है। जो कि पाप नहीं है परन्तु वह हमारे पुराने अथवा पापी स्वभाव को भी देखता है, जिस पर विजय पाने में हमारा पूरा जीवन लग जाता है। वह उन विभिन्न स्वार्थपूर्ण मनोभावनाओं को देखता है जो हमारे अन्दर से प्रकट होती रहती है। वह उन अच्छी शुरुआतों (आरंभ) को देखता है जिनका अन्त अक्सर परिणामों की आशा लगाने से पूर्ण ही हो जाता है।

परमेश्वर ने नूह पर विश्वास की आँखों से दृष्टि की कि नूह जल प्रलय में जीवित रहे (उत्पत्ति 7:6-10) फिर भी, परमेश्वर ने उसे मदिरा के नशे में चूर देखा (उत्पत्ति 9:20-21)। उसने मूसा को उसके विश्वास में देखा (निर्गमन 14:13-14) और उसे उसके क्रोधित एवं अधैर्यता के रूप में भी देखा जब क्रोधित होकर मूसा ने चट्टान पर लाठी मारी थी (गिनती 20:11-12)। उसने दाऊद को स्तुति और आराधना के भजन व गीत लिखते हुए देखा (2 शमूएल 22, भजन संहिता 18), तो भी परमेश्वर ने उसे बेतशेबा के साथ भी देखा (2 शमूएल 11)। उसने पतरस को उसकी परस्पर विरोधी दशा में देखा (मत्ती 16:17, लूका 22:54-62) तथा पौलुस को मरकुस के प्रति अधैर्यता की दशा में देखा (प्रेरितों के काम 15:37-40) और उन बारह शिष्यों में से कौन कौन शिष्य मसीह के दुःख सहने के समय विश्वास योग्य बना रहा? एक भी नहीं! वह एकदम अकेला था (मत्ती 26:56)।

अपूर्ण, असफल होने वाले सन्त! परन्तु फिर भी सन्त!

परमेश्वर हमें ठीक वैसे ही देखता है जैसा कि उसने उन लोगों पर दृष्टि की थी जिनके विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं। और

यदि हमारे जीवन का वृतान्त विस्तार से लिखा जाता तो हमें ठीक वही नमूना देखने को मिलता जैसा कि बाइबल में हम देखते हैं। यह परमेश्वर की आँखों के सामने बेपरदा है।

आपके लिए कार्य

3 नीचे दिए गए जिस परिच्छेद में—परमेश्वर हमें कैसे देखता है—सबसे अच्छी तरह से बताया गया है उसके अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) हम मसीह के साथ जिलाए गए और परमेश्वर के सन्तान हैं। उसके घराने में हमारी स्थिति याजक और सह नागरिक (सदस्य) की है।

(ब) हम एक पवित्र जाति हैं और परमेश्वर के होने के लिए उसके द्वारा चुने गए हैं। फिर भी हमने असफलताओं और विरोधों का सामना किया है।

(स) हम मनुष्य होने के नाते असफल होते हैं। हमने निराशाओं का सामना किया है और अक्सर दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध ठीक नहीं हैं।

परमेश्वर की दृष्टि में क्या महत्त्वपूर्ण है?

विषयवस्तु 2. परमेश्वर किस बात को सबसे महत्त्वपूर्ण समझता है इस विवरण को पहिचानना।

हमने इस बात पर ध्यान दिया है कि हम क्या हैं और हमारे प्रतिदिन के अनुभवों के तथ्य क्या हैं तथा बाइबल इस विषय में क्या कहती है। परन्तु परमेश्वर के लिए क्या महत्त्वपूर्ण है? क्या

वह हमारे सन्त होने के पद को और मूल्यवान बनाता अथवा हमारे व्यवहार को बारीकी से जाँचता है?

इस प्रश्न का उत्तर बड़ी स्पष्टता से दिया जा सकता है; इसके उत्तर में दो पहलू हैं जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए।

मसीह का कार्य

परमेश्वर ने यीशु मसीह के कार्य को प्राथमिकता अथवा उच्चतर मूल्य पर रखा है...उसकी धार्मिकता, उसकी पूर्णता, उसकी आज्ञाकारिता उसके कार्य के पूरक हैं। पवित्रशास्त्र और कारण इसकी स्पष्टता को दर्शाते हैं।

उद्धार का सन्देश है कि जबकि हम पापी ही थे मसीह ने हमारे लिए अपने प्राण दिए–एक धर्मी, अधर्मियों के लिए मरा ताकि वह हमारा मेल पिता से कराए अर्थात् पिता की समीपि में ले आए। यह वह कारण है जबकि हमारा परमेश्वर के निकट आना प्रभाव है। उसकी धार्मिकता हमारी धार्मिकता का कारण बनी!

अतः जब परमेश्वर हमें सन्त कहकर बुलाता है (और हम न तो सन्त जैसा महसूस करते और न ही सन्त जैसा व्यवहार करते हैं), तो वह एक झूठी तस्वीर नहीं देख रहा होता। वह तो एक कार्यप्रणाली के अन्तिम परिणाम को देख रहा थ।–जिसका कारण स्वतः ही स्पष्ट और पूरा है और जिसका प्रभाव पहिले से ही पूर्ण रूप में बताया जा चुका है।

उसके ज्ञान के प्रकटीकरण में वह किसी भी प्रकार से समय की सीमा में बंधा नहीं है। वह तो आदि से अन्त (अथवा कार्यपरिणाम) को देखता है। वह अन्त को आरंभ में ही देख लेता है।

आपके लिए कार्य

4 परमेश्वर वास्तव में हमें "सन्त" अथवा "पवित्र जन" कहकर बुला (पुकार) सकता है क्योंकि वह...

(अ) जानता है कि हम उसकी सेवा करना चाहते हैं।

(ब) हमारी ग़लतियों और असफलताओं को देख नहीं सकता।

(स) देखता है कि हम क्या बनेंगे।

यह हमारे उद्धार के कारण के पुनः आश्वासन पर ध्यान देना है। कुलुस्सियों 1:15-27 परमेश्वर की योजना में मसीह के कार्य (और व्यक्ति) को स्पष्ट रूप में बताता है। मसीह ने हमें छुड़ाया; हमारा छुटकारा उसी में है। वही अनदेखे परमेश्वर के समान दिखाई देने वाला परमेश्वर है। वह समस्त वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता है। वह प्रत्येक वस्तु से पूर्व ही अस्तित्व में था और वही सब कुछ को संभालने (कायम रखने) वाला है। प्रत्येक वस्तु में उसका प्रथम स्थान था तथा जो कुछ परमेश्वर देखता है उसमें भी। वास्तव में वही तो कारण है: "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है...तुम परमेश्वर की महिमा के भागीदार होगे" (कुलुस्सियों 1:27)।

आपकी प्रतिक्रिया (प्रत्युत्तर)

कारण (मसीह और उसका कार्य) के परिणाम का आश्वासन दिया गया है: सन्तता पूर्णता तक पहुँचाई गई है! (रोमियों 8:19, 1 यूहन्ना 3:1-2)। यदि प्रक्रिया के लिए आवश्यक समय पर ध्यान नहीं दिया गया (चूँकि परमेश्वर इस श्रेणी में नहीं आता, न यह उस पर लागू होता है), तब तो कारण और प्रभाव एक साथ ही

हुए। इसी कारण, परमेश्वर की दृष्टि में, हम जो होंगे, वह अभी भी हैं।

आश्वासन अति महान है, फिर भी आपका भाग महत्त्वपूर्ण है। आप महत्त्वपूर्ण बने रहते हैं, मसीह के कार्य को जोड़ने के कारण नहीं, परन्तु उसकी प्रक्रिया (कार्यप्रणाली) में बने रहने के कारण (कुलुस्सियों 1:23)।

आपके लिए कार्य

5 **मान लीजिए** एक विश्वासी जिसे आप जानते हैं उसने आप से यह **पूछा** हो: "परमेश्वर किस बात को सबसे महत्त्वपूर्ण मानता है—मसीह ने मेरे लिए क्या किया अथवा मैं उसके कार्यों के प्रति क्या प्रत्युत्तर दूं या कैसे मानूं?" सबसे उत्तम उत्तर के अक्षर पर गोला बनाएं।

(अ) परमेश्वर मसीह के कार्य को सबसे महत्त्वपूर्ण मानता है क्योंकि वह जानता है कि हमारी मानवीय निर्बलताएँ हमें उसकी प्रक्रिया में भाग लेने के निमित्त अयोग्य ठहराती हैं। इसका अर्थ है कि हमारे प्रत्युत्तर (मानने की प्रक्रिया) को परमेश्वर महत्त्वपूर्ण नहीं ठहराएगा।

(ब) परमेश्वर दोनों को ही भिन्न तरीकों से महत्त्वपूर्ण ठहराता है। वह मसीह के कार्य को कारण (अभिप्राय) के कारण प्राथमिकता के आधार पर प्रथम स्थान पर रखता है। हमारा प्रत्युत्तर महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमें प्रभाव के परिणाम निमित्त उसकी प्रक्रिया में बने रहना है।

परमेश्वर हमें क्यों बुलाता है और हम अपने को क्या देखना चाहते हैं, इनके अन्तर को हमने पहिचान लिया है। हमारा लक्ष्य स्पष्ट है—उसका कारण, उसकी योजना हममें पूरी हुई है। परन्तु अब हमें यह खोजना चाहिए कि हम परमेश्वर के दृष्टिकोण को अपने अनुभव में सत्य बनाने हेतु कैसे सहायक बन सकते हैं। हमें यह मालूम करना चाहिए कि हम सन्त कैसे बन सकते हैं और जो हम हैं भी।

परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करना

विषयवस्तु 3. उन कारणों को पहिचानना कि हम वह क्यों बन सकते हैं जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है कि हम बनें।

मसीही अनुभव का मल्लयुद्ध तथा लड़ाई (अखाड़ा), मसीही जीवन की अनिश्चितता और तनाव; ये सब इसलिए होता है, क्योंकि हम इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं: **हम प्रतिदिन अपने लिए परमेश्वर की योजना (रूपरेखा) को किस प्रकार चुन सकते हैं?**

नया नियम के अधिकांश निर्देश इस प्रश्न से सम्बन्ध रखते हैं। इसके वे परिच्छेद जो यह बताते हैं कि मसीही कैसे बना जाए, छोटे हैं; पर इसके वे परिच्छेद जो यह बताते हैं कि मसीहियों को कैसे जीवन बिताना चाहिए अपेक्षाकृत लम्बे हैं।

परिवर्तन लाने की योग्यता सामर्थ के दो मूलभूत भण्डारगृहों से मिलती है। पहिला है, मसीह के कार्य की वास्तविकता जिसमें उसने पाप की व्यवस्था और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। दूसरा है, भलाई की एक विशेष सामर्थ जिसने बुराई पर जय पाई और बुराई को भलाई से बदल दिया।

मसीह पाप के ऊपर विजयमान था

हमें क्यों अपने-अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को पूरा कर सकते हैं ? इसका पहला कारण यह है कि मसीह ने पाप के ऊपर विजय पा ली है। अब हमारे ऊपर पाप का अधिकार नहीं रहा। पाप का प्रभाव तो है पर उसका प्रभुत्व नहीं रहा।

मसीह की विजय और कार्य कितना वास्तविक था ? मसीह का कार्य न तो कोई विचार, न ही धारणा है। यह तो वास्तविक घटना थी। यह एक निश्चित समय और निश्चित स्थान पर हुई। और यह एक वास्तविक लड़ाई थी। वहां वास्तव में रक्त बहा, वास्तविक मृत्यु हुई, वास्तविक पुनरुत्थान हुआ और यह वास्तविक विजय थी। यह वास्तविक कार्य था क्योंकि पाप की सामर्थ भी वास्तविक थी।

मनुष्य के इतिहास में, कोई भी पाप की व्यवस्था की सामर्थ से बच नहीं सका (रोमियों 3:23)। यह इसकी वास्तविकता का पर्याप्त प्रमाण है। परन्तु जहां इस व्यवस्था को सिद्ध करने का प्रमाण है, वहीं यह भी प्रमाण मौजूद है कि मसीह ने इस पर विजय प्राप्त की है। पुनरुत्थान के उपरान्त चालीस दिन तक अनेक लोगों द्वारा जाँचा गया (प्रेरितों के काम 1:3; 1 कुरिन्थियों 15:3-8)। इस विषय में कोई प्रश्न बाकी न रहा। मसीह जीवित हो उठा है।

पाप की सामर्थ आदम के पतन पर आधारित है। पाप पर विजय पाना एक जन के आज्ञापालन के द्वारा हुआ—वह व्यक्ति है यीशु मसीह (रोमियों 5:18-19)। यह विजय "व्यवस्था" पर "जीवन" का विजयोन्माद है, आशाहीनता पर आशा की जीत है। तथा मनुष्य की मूर्खता के ऊपर परमेश्वर के अभिप्राय का पूरा होना तथा मनोवेग पर प्रेम की विजय है।

आपको पाप की व्यवस्था के ऊपर धार्मिकता तथा स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकती है, क्योंकि वास्तविकता में मसीह आपके पाप के लिए मरा। वह आपके बदले में मरा था। परीक्षा में गिराने के लिए शैतान का तरीका है आपको हतोत्साहित या निराश कर देना तथा आपकी विजय की वास्तविकता के प्रति शंका उत्पन्न कर देना। वह डाँट-डपट, दोष लगाना तथा छल जैसे हथकण्डों का प्रयोग करता है। परन्तु आप स्वतन्त्र हैं!

आपके लिए कार्य

6 अब पाप की हम पर प्रभुता अथवा शासन नहीं रहा क्योंकि...

(अ) आदम की अनाज्ञाकारिता समस्त मनुष्य जाति पर पाप ले आई।

(ब) मसीह की वास्तविक विजय ने पाप की वास्तविक सामर्थ पर विजय प्राप्त की है।

(स) बाइबल हमें समझाती है कि हमें कैसे मसीही बनाता है।

भलाई ने बुराई पर विजय प्राप्त की

अपने जीवनों में परमेश्वर की योजना को पूरा करना क्यों संभव है इसका दूसरा कारण है क्यों भलाई (परमेश्वर की) ने बुराई (शैतान की) पर विजय प्राप्त की है। पवित्रशास्त्र इस सच्चाई को हम पर प्रकट करता है कि हम कैसे पुराने या पापमय स्वभाव को, जो अत्यधिक मनोव्यथा उत्पन्न करता है, हरा सकते हैं।

पापमय आदत यू ही नहीं रुक जाती है। वह तो दूसरे पाप का स्थान लेती रहती है। पाप सृजनात्मक नहीं है, यह तो विकृत या भ्रष्ट कर देने वाला है। इसलिए बाइबल ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत करती है कि बुराई को भलाई से बदला जा सकता है। ये भले कार्य मात्र सामान्य व्यवहार को नहीं दर्शाते पर ये तो पुराने स्वभाव के प्रतीक हैं। शरीर और आत्मा के बीच चलने वाले मल्लयुद्ध में हमारा कार्य है भलाई से बुराई पर विजय पाना।

पुराने स्वभाव के जीवन मिथ्यावादिता (झूठ के पिता, शैतान का वरदान) पर आधारित होता है। नया स्वभाव स्वयं को सत्य रूप में प्रकट करता है। अतः हमें झूठ बोलना छोड़कर उसके स्थान पर सच बोलना है (इफिसियों 4:25)। अगले अभ्यास में आप इस सम्बन्ध के अन्य उदाहरणों का अध्ययन करेंगे।

आपके लिए कार्य

7 नीचे दिए गए पद अपनी बाइबल में से पढ़िए। नीचे बुराई के कार्यों के नाम दिए गए हैं जिन्हें आप पद में दिए गए भले कार्यों से बदलें।

(अ) इफिसियों 4:28; लूटमार और चोरी करना

.....

(ब) इफिसियों 4:29; गन्दी बात मुँह से बोलना

.....

(स) 1 पतरस 3:9; बुराई के बदले बुराई करना

.....

(द) ग़लतियों 5:16-26; हमारे मानवीय स्वभाव की माँग के अनुसार बुरे काम करना

.....

(य) 3 यूहन्ना 11; बुरे की नकल करना

.....

यह विधि हमें उस नमूने को दिखाती है जो पूरे पवित्रशास्त्र में पाई जाती है। शैतान ने सदा ही यह प्रयत्न किया है कि भलाई के स्थान पर बुरे काम रख दिए जाएँ। यह प्रक्रिया पतन का कारण

बनी (उत्पत्ति 3)। हमें बुराई के स्थान पर भले कार्यों को रखना है।

सच्चाई से चलना इसका मतलब दंभी बनना नहीं है। यह तो नये स्वभाव का जो पवित्रता में सृजा गया अपने दिमाग की ताक़त और इच्छा का प्रयोग करना है। जब परमेश्वर हमारे जीवन के उन क्षेत्रों में, जो हमारी सामर्थ के बाहर हैं, कार्य करना आरंभ करता है तब हम बुराई के स्थान पर भले कार्य करने लगते हैं और यह प्रकट करते हैं कि "मसीह हममें" है। यही वह प्रक्रिया है जो हमारे अन्दर बनती जाती है (और हम अभी इसी पक्रिया में हैं भी)

जब हम इस सच्चाई को ग्रहण कर लेते हैं कि हम इस प्रक्रिया में हैं तो परिणाम स्वरूप कई परिणाम सामने आते हैं। हमारे लिए यह सहज हो जाता है कि जो इस प्रक्रिया में हैं हम उन्हें ग्रहण करते हैं। हम अपने संघर्ष को भलीभाँति समझ सकते हैं। हम परीक्षाओं पर विजय पाने की शक्ति पाते हैं क्योंकि हमें मालूम होता है कि कैसे सामना करना है। हम अपनी आदत रूपी सामर्थ का प्रयोग कर सकते हैं, एक ऐसी सामर्थ जिसे शैतान अक्सर प्रयोग करता है, ताकि हम स्वयं को निर्बल बनाने के स्थान पर मज़बूत बनायें। इसका मतलब यह है कि हमें अपने पापमय स्वभाव की बुराई को भली आदतों से बदलना चाहिए।

आपके लिए कार्य

8 हमने ऐसे कुछ कारणों का अध्ययन किया है कि हम क्यों परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। नीचे दिए गए कथनों में से ऐसे कथनों के अक्षरों पर गोला बनाएँ जिनमें उपरोक्त कारण दिए गए हैं।

(अ) परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम जो कुछ भी करते हैं उन सब में पूरी तरह से धर्मी और सिद्ध पाए जाएँ।

(ब) हमारे ऊपर पाप का प्रभाव तो है परन्तु प्रभुत्व नहीं है।

(स) जो भलाई परमेश्वर की ओर से है वह शैतान की ओर से आने वाली बुराई पर जयवन्त है।

(द) मसीही जीवन का संघर्ष तब उठ खड़ा होता है जब हम सच्चे मसीही बने रहने हेतु प्रयत्नशील रहते हैं।

(य) हम उस वास्तविक विजय में भागीदार बनते हैं क्योंकि मसीह ने पाप पर विजय प्राप्त की है।

हमारे लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा करना संभव है। क्योंकि मसीह ने पाप पर विजय पाई है।

आपके लिए कार्य

9 जब आप इस पाठ के अध्ययन को पूरा करते हैं तो थोड़ा समय निकालकर I यूहन्ना 3:1-3, 9-10 पद अपनी बाइबल में से पढ़िए। तब अपनी नोट बुक में निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(अ) हमारे पास क्या आशा है (पद 2) ?

(ब) हम पाप करते क्यों नहीं रहते ?

अपने उत्तरों को जांच लें

5 (ब) परमेश्वर दोनों को ही महत्त्वपूर्ण समझता है।

1 (अ) इफिसियों 2:22

6 (ब) मसीह की वास्तविक विजय ने ..... विजय पाई।

2 आपका उत्तर। आपकी कोई भी कठिनाई वास्तव में विजय पाने का अवसर बनती है।

7 (अ) काम करके दूसरों को देना। (ध्यान रखें: हम इसे वस्तुओं से भी जोड़ सकते हैं, चाहे चोरी करना या काम करना और देना।)

(ब) अच्छे शब्दों का प्रयोग करें जिनसे भली बातें निकलें। (ध्यान दें: शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। प्रश्न यह है कि हम कौन सी आदत अपने अन्दर पनपने देते हैं।)

(स) बुराई के बदले आशीष देना।

(द) आत्मा के अनुसार अच्छे (भले) कार्य करना।

(य) जो भला है उसी के अनुरूप चलना।
(अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।)

3 (ब) हम एक पवित्र जाति हैं–(अन्य चुनाव वे सब नहीं बताते जो परमेश्वर देखता है।)

8 (ब) हमारे ऊपर पाप का प्रभाव तो है, पर उसका अधिकार हम पर नहीं है।

(स) भलाई जो परमेश्वर की ओर से आती है...

(य) हम वास्तविक विजय के भागीदार बनते हैं...

4 (स) यह देखना कि हम क्या बनेंगे।

9 (अ) यह तो मसीह के समान (अनुरूप) होगा।

(ब) क्योंकि परमेश्वर का निजी स्वभाव हम में रहता है।
(अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।)